ओम भारद्वाज की पांच कविताएं

चट्टान का दांत

खड़ी है चट्टान
एक दांत पर
या यूं कहें
दांत में दबोच रखा है पहाड़
दांत उखाड़ना आसान नहीं होता
सूख जाता है तोला-तोला खून
मजदूर का
निकलता है पसीना बूंद-बूंद
टुकड़ा-टुकड़ा होता है पत्थर
चूर-चूर
खुरदरे हाथों टूट जाता है घमण्ड
टूटता नहीं सिर्फ
चट्टान का दांत
पहाड़ को पकड़ रखा है उसने।

पत्थर

तुम मुझे छैनी-हथौड़े से तराशो
और देवता बना दो
चन्दन लेपन करो
चढ़ाओ मुझ पर जल-दूध-फूल।

मुझे चौरस काट कर
दीवार में चिनवा दो
भवन बनाकर
शयन कक्ष में करो विलास।

मुझे नदी के तटों से बांध
बना दो सेतु।
आखिर पत्थर हूं न।

भूख पीसता हूं
जो मुझे बना देते हैं घराट।

पहाड़ पर बादल

न जाने कब !
पहाड़ पर
घिर आए, सफेद बादल
सूरज खेले आँख मिचौली
लौट आए भूमिगत
घर का चिराग

न जाने कब !
पहाड़ पर
घिर आए काले बादल
करुण रस बरसाए
पपीहे का कण्ठ

न जाने कब !
पहाड़ पर बरसे बादल रिम-झिम
खिल उठे मिट्टी
फूट आएं नए अंकुर
धरती की कोख में

न जाने कब !
धुंध का दुशाला ओढ़े बादल
पहाड़ को छिपा ले बच्चे की तरह
गोद में
और हम ढूंढ़ते रहें घाटी-घाटी उसे
और पहाड़ हमारे भीतर बैठा हो।

रावी का चम्बा

एक नदी जिसकी गोद में
खेलता था वह
कर दी गई कैद
सुरंगों और कंकरीट के फाटकों में

एक पीपल का पेड़
जिसके नीचे मिलता था
एक प्रेमी युगल
कूंजू चंचलो
उस पर पक्षी नहीं चहचहाते

एक मैदान
जहां जुटते हैं असंख्य लोग मिंजर में
कंकरीट के जंगल में
बदल रहा है धीरे-धीरे

एक घाटी जहां
गद्दी की बांसुरी छेड़ती थी
सुरीली धुन
उतार कर ले गया है सुहाग
घाटी का कोई
बेवा लग रही है वह

एक जंगल जहां
प्रेम की भाषा बोलते थे मोर
पर कतर दिये उनके
खाली हो गए अरण्य
सूख गई झील

पांव की चप्पल घसीटते
सर पर बांधे रुमाल
एक बूढ़ा कर रहा याद
अपने पुराने दिन
कोई नहीं बतियाता इससे
शायद यह रावी का चम्बा है

देवदार का रोना

कोई चीखता सन्नाटा तोड़ते हुए
ध...ड़ा...म..........
मेरी पलकें खुलीं
नजरें दौड़ी चारों ओर
जैसे भयानक सपना देख जागा
मैं चीख के पीछे भागा
वह रो रहा था
औंधे मुंह गिरा
आंखें मलता
कुछ पूछना चाहा मैंने
कुछ उसने चाहा कहना
बीच में ही खो गए शब्द
काटे गए कुछ
षड्यंत्रकारी आरी के दांतों
खररर.......खररर....खररर.......
जो बचा
टुकड़ों-टुकड़ों में
बाजार ले गया
नंगे हुए पहाड़
उतार कर अपनी पहचान
संस्कृति की कोख में
उभर आए फफोले
बची रही सिर्फ टीस
भविष्य के चेहरे पर।

गांव बलन, डाकघर जैस,
तहसील ठियोग, जिला शिमला, हिप्र. 171201